

१९५६ जानूर १८ ईश्वरनगरी देवा १२ शिलायु प्रतिष्ठित दारा ज्ञानिका एवं गर्वदेव  
विदेव ज्ञान गृहो ग्रन्थालयो

१)	ज्ञान वर्णन एवं पादोपाद द्वारा ज्ञान ट्रॉफी व्यापारी द्वारा (पार्टि) दारा ज्ञानिका !	ज्ञानिका	प्रबुष्मिष्ट
२)	ज्ञान वर्णन पादम शासनात द्वारा पादमुदार जिए इसे एवं ट्रॉफी, दारा ज्ञानिका	ज्ञानिका	"
३)	१९५६ क्यान्डा द्वारा ज्ञान शासन, जिए (क्या ज्ञान द्वारा) वार्षिक विद्यालय, दारा	ज्ञानिका	"
४)	ज्ञान वर्णन एवं ज्ञान शासन द्वारा ज्ञान एवं इसे एवं ०, जिए वर्षेच, दारा	ज्ञानिका	प्रेष्मिष्ट
५)	ज्ञान वर्णन ज्ञान शासन, जिए वार्षिक द्वेष-प्रतिवेषी, दारा	ज्ञानिका	प्रबुष्मिष्ट
६)	प्रबुष्म ग्राम्य व्यवसाय एवं जिए ज्ञान ज्ञानिका !	ज्ञानिका	प्रेष्मिष्ट
७)	प्रबुष्म पर्यावरण व्यवसाय, ज्ञान ज्ञानिका !	ज्ञानिका	प्रेष्मिष्ट
८)	प्रबुष्म उच्चाधीन व्यवसाय, ज्ञानिका एवं ज्ञान ज्ञानिका !	ज्ञानिका	प्रेष्मिष्ट

विदेव पादम्भव ज्ञान :-

- (१) ज्ञानेन्द्रीय दारादेव विद्युत प्रतिष्ठान,  
दारा ! (प्रतिविधि)
- प्रेष्मिष्ट
- (२) उच्चाधीन ग्रन्थोपादी,  
दोषक एवं शोषक, दारा
- प्रेष्मिष्ट

### कार्यक्रम

ज्ञानिका इत्याद्य-वर्ष वार्षिक द्वेष-प्रबुष्म विद्यालय ० वार्षिक द्वेष-प्रबुष्म विद्यालय  
वार्षिक द्वेष-प्रबुष्म विद्यालय विदेव ज्ञानिका एवं विदेव हैं अय, पि, ट्रॉफी लाउडे" पर्यावरण  
विद्यालय ग्राम्य ० ग्राम्यानुरूप दारा ऐन्हुकि ज्ञान विवेचना करता ।

कार्यक्रमके प्रक्रियाक्रमके अनुसार

दारा कार्यक्रमके

२६-०२-१९५६

सुन्दर तथा :-

गो गायक वर्षाये गता वृद्धिति रहेता थे । उमे लोकिन्हात लमक्क शूलक विदेश  
वायप्रद वृद्ध दास विदेशपरिव विधाव तथा एवं जैश्वात् रुद्र ओ वशामृत विजय इ  
प्रतिविवर्णीत उविष्य एवं घमूर्ध अनुरुद्र द्वा विदेशव वसुदिवाकु पुर्ण विवेचय भास्त्रा क्षेत्र  
ति, इ, ओ औशद्वात् शशित देवविद विद्युत्तमा वास्त्रा ज्य यु विवित इव ।

शूल ओ वशामृत विषपात् प्रतिविवि दावाव हे विधाव वक्तव्य इतेते "अव, नि एव लोके"  
वर्दु बदावा द ऐन्नुव दृष्ट्वा जौश ता रैतिवेते इव वार्षिकदी वा वैश्वा ग्रहण विद्युत्तमा ।  
जैश्वात् उत्तम गार्जु विद्युत्तमा यूषेत्त विर्ग शश्वा वदाव गतिविवर्णवा ग्रहण वक्ता रैत्यात्ते एवं  
शूलेत उत्तम गार्जु विद्युत्तमा वार्ष शैव्यु वक्ता इत्युवाव ओ इत्याते विद्युत्तमा । वार्षिक प्रतिपूर्वित  
वदावा विवर्णव विषपुर्णित ग्रुति जौश ता पवित्राव दृष्टि वित्तेत्वा । वृत्तव विर्ग वास्त्रे  
वर्तित्वृत्त एवं पालुवाविव दमद्वय ई । वा द्वृ वदगम्भ इत्येवे । घासायी २३ मे इत्युवावी १९५६  
इत्येते ७ शूलादत् दृष्ट्वा विर्ग एवं विष्य वक्ता इत्येवे विद्युत्तमा वासा वक्ता इत्येत्वा ।  
प्रद्वावबौद्ध पर्व जैश्वात् इव विषपात् उत्तम विषपात् उत्तम विष्य वक्ता इत्येत्वा । विद्युत्तमा  
वदाव गार्जु द विषपुर्णित्वा विवित पालुवृद्धया द वक्ता शुभावित वार्षेव ।

वै वासावात् वैयुक्त विवि वाति क्याट्टेव वै वैर्तेव विष्युप्तवावीव । वर्त्तवाव जप्तु वार्षेव  
द वा व शूलादत् वदुत्तुत इत्येत्वे वा । वार्षिक उप्तु युजाव वदुव वद्वनावेद्व शुभ्युतावे  
चमित्तेत्वे वा ।

वेशाधिप विधाव चक्रा एवं जैश्वात् ग्रुति विष्य व वक्तव्य वार्षित्वे देवाशेक्वी  
विर्ग वृद्धेत ग्रुति वार्षिक वार्षित्वे विष्य विष्य वृद्धेत्वे विष्य विष्य विष्य विष्य  
वार्षेव । जैश्वाविष्याद्विवर्णव ऐविविवदा ति, इ, ओ प्रद्व विष्युप्तित विविवर्णवावृवि  
वदुवावृव विवित्वे एवं इत्वा ।

- १। विद्युत्तम विष्युप्तित दृष्ट्वा इत्येत्वे वार्षित्वे विष्युप्तिव वासा वृद्वेत्वे  
वास्त्रा वास्त्रा वार्ष ग्रुति विष्युप्तिव विर्ग एवं जैश्वात् व वास्त्रे ।
- २। विष्य व वक्तव्य वा दृष्ट्वे वृद्धेत्वे विष्युप्तिव वव वृद्धेत्वे विष्युप्तिव वासी वाति  
वृद्ध वार्षिकद वक्ता ।
- ३। वृद्ध वा दृष्टि विष्य वार्षिक वक्ता ओ दृष्टिवृद्ध एवं दृष्टि दृष्टि दृष्टि ।
- ४। वा दृष्ट्वे विष्युप्तित विष्युप्तिव विष्युप्तिव ।
- ५। क्याट्टेव वैर्तेव विष्युप्तित विष्युप्तिव वा दृष्ट्वे वृद्धेत्वे विष्युप्तित विष्युप्तित  
एवं विष्युप्तित विष्युप्तित विष्युप्तित ।
- ६। एवं रात्रा वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य वक्तव्य ।

*विष्युप्तित विष्युप्तित*  
क्याट्टेव वैर्तेव विष्युप्तित विष्युप्तित

वासा वृद्धेत्वे

१८-२-१६.